Golden Research Thoughts ISSN 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF)
Volume-4 | Issue-10 | April-2015 Available online at www.aygrt.isrj.org

कृषि विकास की सीढियाँ - एक अध्ययन

एम.जी. पांण्डेय
जे.डी.पी.एस. महा., दर्यापूर , जि. अमरावती (महाराष्ट्र)

Authors Short Profile

Mangalavati G. Pandey is working as an Assitstant Professor at Department of Commerce in J.D.P.S.Mv. Darayapur, Dist: Amravati (M.S.). She has completed B.A., B.Ed., M.A.(ECO)., M.Com., M.Phil., D.B.M., Ph.D.(Ongoing). She has professional experience of 3 years and 4 months and research experience of 2 years. She has done one minor research project.

सारांश

कृषि का विकास कम-से-कम १०,००० वर्ष पूर्व हो चुका था। तब से अब तक बहुत से महत्वपूर्ण परिवर्तन हो चुके है। कृषि, भूमि को खोदकर अथवा जोतकर और बीज बोकर व्यवस्थित रुप से अनाज उत्पन्न करने की प्रक्रिया है । म-नुष्य -ने पहले - पहल कब कहाँ और कैसे खेती करना आंरभ किया, इसका उत्तर सहज नहीं है। सभी देशों के इतिहास में खेती के विषय में कुछ--न-कुछ कहा गया है। कुछ भूमि अब भी ऐसी जहाँ पर खेती नही होतीं । अफ्रीका और अरब के रेगिस्तान, तिब्बत और मंगोलिया के ऊँचे पठार तथा मध्य ऑस्टेलिया में आज भी खेती नहीं होती । कांगो के बौने और अंदमान के बनवासी खेती नही करते ।

प्रस्तावना

आदिम अवस्था में मनुष्य जंगली जानवरों का शिकार कर अपना उदर पूर्ति करता था। पश्चात उसने कंद-मूल, फल और स्वत: उगे अन्न का प्रयोग आरंभ किया और इसी अवस्था में किसी समय खेती द्वारा अन्न उत्पादन करने का अविष्कार उन्होंने किया होगा । फ्रांस मे जो आदिमकालिन गुफाँए प्रकाश में आई है उनके उत्खनन और अध्ययन से ज्ञात होता है कि पूर्वपाषाण युग में मनुष्य खेती से परिचित हो गया था। बैलों को हल में जोतने का प्रमाण मिश्र की पुरातन सभ्यतासे मिलात है ।अमेरीका में केवल खुरपी और मिट्टी खोदनेवाली लकडी का पता चलता है।

भारत में पाषाण युग में कृषि का विकास कितना और किस प्रकार हुआ था। इसकी संम्मति और जानकारी नही है। किंतु सिंधु नदी के काँठे के पुरावशेषों के उत्खनन से इस बात के प्रचुर प्रमाण मिले है कि आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व कृषि अत्युन्नत अवस्था में थी और लोग राजस्व अनाज के रुप में चुकाते थे, ऐसा अनुमान पुरातत्वविद मोहन जोदडों में मिले बंडे-बंडे कोठरों के आधार पर करते है। वहाँ से उत्खनन में मिले गेहूँ और जौ के नमूनों से इस प्रदेश में उन दिनों इनके बोए जाने का प्रमाण मिलाता है। वहाँ से मिले गेहूँ के दाने ट्रिटिकम कंपैक्टम (Triticum compactum) अथवा ट्रिटिकम स्फीरौकोकम (Triticum sphaerococcum) जाति के है। इन दोनों ही जाति के गेहूँ की खेती आज भी पंजाब में होती है। यहाँ ये मिला जौ हाडियम बलगेयर (Hardeum vulagare)जाति का है। उसी जाति के जौ मिश्र के पिरामिडों में भी मिलते है। कपास जिसके लिए सिंध की आज भी ख्याति है । उन दिनों भी प्रचूर मात्रा मे पैदा होती था।

भारत में नौ हजार वर्ष ईसापूर्व के भी पहले से कृषि की जा रही है। यहाँ बहुत पहले से ही वृक्ष लगाना, फसले उगाना एंव पशुओं को पालतू बनाना आंरभ हो गया था। भारत में पाषण युग में कृषि का विकास कितना और किस प्रकार हुआ था इसकी संप्रति कोई जानकारी नहीं है । किंतु सिधु नदी के काँठे के पुरावशेषों के उत्खनन के इस बात के प्रचुर प्रामाण मिले है कि आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व कृषि अत्युन्नत अवस्था में थी। भारत के निवासी आर्य कृषिकार्य से पूर्णतया परिचित थें। यह वैदिक साहित्य से स्पष्ट परिलक्षित है। ऋगवेद और अर्थर्ववेद सें कृषि संबंधी अनेक ऋचाएँ है जिसमें कृषि संबंधी उपकरणों का उल्लेख तथा कृषि विधा का परिचय है। ऋग्वेद मे क्षेत्रपति, सीता और शुनासीर फोलक्ष्यकर रची गई एक ऋचा (४.५७.८) है जिससे वैदिक आर्यों के कृषि विषिय ज्ञान का बोध होता है।

एक अन्य ऋचा से प्रकट होता है कि उस समय जौ हल से जोताई करके उपजाया जाता था। अर्थर्ववेद से ज्ञात होता है कि जौ, धान, दाल और तिल तत्कालीन मुख्य शस्त्र थे। अर्थर्ववेद में खाद का भी संकेत मिलता है जिससे प्रकट है कि अन्न पैदा करने के लिए लोग खाद का भी उपयोग करते थे।

कृहा एंव वतौत सूत्रों में कृषि से संबंधित धार्मिक कृत्यों का विस्तार के साथ उल्लेख हुआ है। उसमें वर्षा के निमित्त विधिविधान की तो चर्चा है साथ ही इस बात का भी उल्लेख है कि चूहों और पक्षियों से खेत में लगे अन्न की रक्षा कैसे की जाए । पाणिनि की अष्टाध्यायी में कृषि संबंधी अनेक शब्दों की चर्चा है जिससे तत्कालीन कृषि व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है।

भारत मे ऋग्वेदिक से ही कृषि पारिवारिक उद्योग रहा है और बहुत कुछ आज भी उसका रुप है । लोगों को कृषि संबंधी जो अनुभव होते रहें है उन्हें वे अपने बच्चों को बताते रहे है उनके अनुभव लोगो में प्रचलित होते रहे। उन अनुभवों ने कालांतर मे लोकोक्तियों और कहावतों का रुप धारण कर लिया जो विविध भाषा - भाषियों के बीच किसी न किसी कृषि पंडित के नाम प्रचलित है और किसानों की जिव्हा पर बने हुए है। हिंदी भाषा-भाषियों के बीच ये घाघ और भड्डरी के नाम से प्रसिध्द है। उनके ये अनुभव आंधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों के परिपेक्ष्य में खरे उतरे है।

भारतीय कृषि का इतिहास अत्यंत ही रोचक है। विश्व के कुल खाद्यान उत्पादन में भारत का पहले भी अग्रणिय स्थान था और आज भी है। आज भारत विश्व का दूसरे क्रंमाक का राष्ट्र बन गया है जो विश्व के कुल उत्पादन में एक बडा हिस्सेदार है फिर भी भारत की जनसंख्या जितनी तीव्रता से बढ रही है उतनी तीव्रता से उत्पादन में वृध्दि नहीं हो रही है। इसलिए आज भी अन्न की समस्या अपना मुँह फाडे खडी है। कृषि के इतिहास को अच्छि तरह से समझने हेतु इसे दो भागों में बॉटा जा सकता है।

१) कृषि का स्वतंत्रता पूर्व का इतिहास :-

इंग्लैंड की ईस्ट इंडिया कंपनी ने जब भारत में प्रवेश किया था तब उसका उददेश्य अपनी विदेशी वस्तुओं ा भारत में प्रचार-प्रसार करके व्यापार करना और अधिक-से -अधिक लाभ कमाना था। लेकिन लाभ कमाने तक ही उनकी इच्छाएँ सीमित नहीं रही देश की अर्थव्यवस्था पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के पश्चात अब उनका लक्ष भारत के राजनैतिक अस्तित्व पर अपना कब्जा करना था।

इसलिए उन्होंने भारत के अधिक-से-अधिक व्यवसायों को अपने अधिकार में करके संपूर्ण आर्थिक सत्ता अपने हाथों में करने हेतु अधिकाधिक लाभ कमाने का उददेश्य सामने रखकर व्यवसाय करने की रणनीति बनाई। अब ईस्ट इंडिया कंपनी पूर्ण रुप से एक वाणिज्यीक संस्था न होकर राजकीय -वाणिज्यीक संस्था के रुप में परिणीत हो चुकी थी। उस समय भी भारत का प्रमुख व्यवसाय खेती ही थी। अंग्रेजों के आने के पूर्व व पश्चात की खेती की परिस्थितिया भी भिन्न - भि–न थी। उन्होंने जमीन अधिकार, लगान, व जमीन संबंधी अन्य कायदे कानूनों में अनेक परिवर्तन किये स्वतंत्रता पूर्व की स्थिति को पून: दो भागों में बटाँ जाता है:

१) अंग्रंजों के भारत में आने से पूर्व का कृषि का इतिहास
२) अंग्रंजों के भारत में आने पश्चात की कृषि का इतिहास

१) अंग्रंजों के भारत में आने से पूर्व का इतिहास :-

बडे - बडे गाँवो की संकल्पना नही थी। स्थानीय स्वराज्य संस्थाएँ व भूआय प्रशासन द्वारा ही उसका नियोजन किया जाता था। पूर्व पूँजीवादी काल में भी संपूर्ण भूमि का मालिक एक ही व्यक्ति यह संकल्पता अस्तिव में नहीं थी। सभी समुदायों ा केवल भूमि का कुछ हिस्सा ही उपयोग के लिए दिया जाता था। प्रत्येक समुदाय वर्ष भर के अपने कुल उत्पादन का एक निश्चित हिस्सा भूस्वामी को देते थे और शेष ऊपज से अपने वर्ष भर की आजिविका चलाते थे । ाव के पाटिल या मुखिया ही 'मामलातदार' या मुख्य किसान के रुप में जाने जाते थे जो प्राप्त उत्पादन का १/६ या १/३ उस राज्य के नवाब को पहुँचाते थे। नवाब अपनी इच्छा अनुसार जितनी चाह उतनी भूमि उस पाटीलो को खेती के लिए दे देते थे व उसके साथ ही सिंचाई व जोताई ा साधन सामग्री भी उन्हें नवाबों से मिलती थी। उसके पश्चात पाटील अपनी इच्छा अनुसार जिसे चाहे उसे उतनी जमीन जोताई हेतु देते थे और उनसे मनमाना लगान वसूल किया करते थे। लगान अर्थात भूमि की कुल ऊपजा का वह हिस्सा जो व्यक्ति भूस्वामी के भूमि के उपयोग के बदले उसे देता है। इस प्रकार भूमि व उसके ऊपज संबंधी सभी समायोजना गाँव के मुखिया अर्थात पाटील अर्थात ग्राम पंचायात अपने पुराने ढर्रे पर किया करती थी।

२) अंग्रंजों के भारत में आने पश्चात की कृषि का इतिहास :-

ब्रिटिश सरकार ने भारत में लगान-पध्दति में बहुत सी तब्दीलियाँ की। स्थाई बन्दोबस्त में जमींदारों को किसानों से लगान वसूल रने का असीम अधिकार दे दिया गया। कुछ प्रांतों में रैयतवारी पध्दति लागू की गई और कुछ में महलवारी पध्दति। जमींदारी प्रथा त्रि-स्तरीय पध्दति थी जिसमें सरकार रैयत से सीधे लगान वसूल करती थी। रैयतवारी पध्दती व्दि-स्तरीय पध्दति थी जिसमें सरकार रैयत से सीधे लगान वसूल करती थी । इन सभी प्रथाओं में शीघ्र ही मध्यस्थों की श्रेणियां विकसित हो गई। बढते हुए लगान के कारण किसान उधार लेने के लिए बाध्य हुए और साहूकारों के वर्ग का उदय हुआ। जब किसान लगान नहीं चुका पाते थे, उन्हें बेदखल कर दिया जाता था। बेदखल होने की बजाये उन्होंने साहूकारों से रुपये उधार लेकर लगान देना शुरु किया परन्तु साहूकारों ने भी उनको तंग किया। बहुत अधिक ब्याज उनसे वसूल किया। धोखे से ज्यादा रकम लिखा लेते थे। उनकी पैदावार को और उनके मवेशियों को जबरदस्ती ले जाते थे। सर ार ानून और कचहरियॉ भी साहूकारों के पक्ष में थे। जमींदार, ताल्लुकेदार और साहूकार कई प्रकार के अवैध उपकर वसूल करके किसानों को तंग करते थे। ये उपकर अनेक प्रकार के थे, जैसे पथकर,

मेला खर्च, पर्व कर, जमींदार के परिवार में कोई विवाह होने पर कर, डाक खर्च, दाखिल खर्च, टोल खर्च इत्यादि-इत्यादि। ल□ा-न या इन उपकारों के समय पर अदा न करने पर किसानों को घोर उत्पीडन का सामना करना पडता था। उनका जीवन और सम्पति जमींदारों और उनकें दलालों के रहम पर थी।

अग्रंजो ने राजस्व-प्रणाली में जो परिवर्तन किए उनके करण भू-स्वामी और साहूकारों के वर्गो में तेजी से वृध्दि हुई और वे ग्रामीण क्षेत्रों में बडे शक्तिशाली हो गए। उनके अतिरिक्त बागों के अंग्रेज मालिकों ने चाय, रबड, काफी तथा नील के बाग लगाए। ि□सा-नों □ा जबरदस्ती बेदखल करके बाग लगाए गये अथवा उन्हें मामूली □ीमत पर अपनी जमीन बेचनी पडी। इन क्षेत्रों में किसान या तो दिहाडी पर काम करने वाले बनकर रह गए या फिर ठेके पर काम करने वाले श्रमिक जिनकी स्थिति बंधुआ मजदूरों जैसी थी। किसान इस दमन को चुपचाप न सह सके और कई स्थनों पर उन्होंने विद्रोह भी किए परन्तु उन्हें निर्दयतापूर्वक कुचल दिया □या।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में बार-बार अकाल पडे और भूख से लाखों कृषक और अन्य कमजोर वर्ग के लो□ मर □ये। कहा जाता है कि लगभग २४ छोटे-बडे अकाल पडे । १८६७-७७, १८९७-९८ और १८९९-१९०० □ भीष□ अकालों से यह स्पष्ट हो गया कि, उत्पीडक, भूमिकर नीति का कल थे। सूखे और अकालों से ग्रामीण प्रदेशों में अशांति और व्यवस्था की स्थिति बहुत बिगड गयी और अंग्रेजो के अपने शासन काल में कृषि संबंधी अनेक आंदोलनो का सामना करना पडा जैसे :-

१) संथाल विद्रोह (१८५५-६)
२) १८५७ □ा स्वंतत्रता संग्राम
३) नील विद्रोह १८५६-६०
४) पूर्वी बंगाल के किसानों का आंदोलन (१८७२-७६)
५) मराठा कृषकों का विद्राह १८७५
६) भेापला कृषकों का विद्रोह १८३६ और १८५६
७) असम मे विद्रोह १८९३-८४
८) पंजाब के किसान १८७६-१९०७
९) दक्षिण भारत के किसानो का विद्रोह १९ वी शताब्दी
१०) चम्पारन का सत्याग्रह १९१७

ऐसे अनेकानके संघर्षो के बाद भारत को अंग्रेजों की गुलामी से आजादी मिली। किंतु आजादी के बाद का सफर भी भारत के लिए इतना आसान नहीं रहा ।

□ृषि का स्वतंत्रता पश्चात का इतिहास:-

भारत को १५ अगस्त १९४७ को जब स्वतंत्रता प्राप्त हुई तब भारत की आर्थिक स्थिति पूर्ण रुप से चरमराइ हुई थी। इस स्थिति का मुँह तोड जवाब देने का अब समय आ चुका था। भारतीय अर्थव्यवस्था की धूरी ही कृषिपर आधारित होने के कारण तात्कालिन प्रधान मंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु ने अनेक योजनाए शुरु की। जिसका धीरे-धीरे असर दिखाई दे-ने ल□ा था। खेतीके क्षेत्र में जो अभूतपूर्व क्रांति देखने में आई वह वर्ष था १९६० का जिसे हरित क्रांति के रुप में जाना जाता है। १९६० □ बाद □षि □ □त्र में हरित क्रांतिके साथ नया दौर आया। सन २००७ में भारतीय अर्थ व्यवस्था में कृषि संबंधित कार्यो (जैसे वानिकी) का सकल धरेलू उत्पाद(GDP) में हिस्सा १६.६% था। उस समय संपूर्ण कार्य काने वालो का ५२% कृषि में लगा हुआ था।

भारतीय कृषि में १९६० के दशक के मध्य तक पांरपरिक बीजों का प्रयोग किया जात था जिनकी ऊपज अपेक्षाकृत कम थी। उन्हें सिंचाई की कम आवश्यकता पडती थी। किसान उर्वरको के रुप में गाय के गोबर आदि का प्रयोग करते थे। १९६० □ बाद उच्च उपज बीज (HYB)का प्रयोग शुरु हुआ। इससे सिंचाई और रासायनिक उर्वरकों और किटनाशकों का प्रयोग बड गया।

इस कृषि में सिंचाई की अधिक आवश्यकता पडने लगी । इसके साथ ही गेंहू और चाँवल के उत्पादन में काफी वृध्दी हुई जिस कारण इसे हरित क्रांति भी कहा गया। पंजाब हरियाणा और उत्तर प्रदेश के किसानों ने कृषि के आधुनिक तरिकों का सबसे पहले प्रयो□ि□या । आधुनिक कृषि विधियों ने प्राकृतिक संसाधनों का अति दोहन किया है। अब इसके दुष्परिणाम भी दिखाई देने लगें है। उर्वरको के अधिक प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता कम हो गई है। नलकूपों से सिंचाई के कारण भूमि जलसतत निष□ाषन से भूमिगत जलस्तर बहुत नीचे चला गया है।

सार□ी - १

वर्षानुसार जुताई क्षेत्र

वर्ष	जुताई क्षेत्र (हेक्टर में)
१९५०	१२०
१९६०	१३०
१९७०	१४०
१९८०	१४०
१९९०	१४०
२०००	१४०
२०१०	१४०

सार□ी - २

भारत मे विभिन्न वर्षे में दाल - गेहूँ का उत्पादन (दसकरोड टन मे)

वर्ष	जुताई क्षेत्र (हेक्टर में)
१९७०-७१	१२.२४
१९८०-८१	११-३६
१९९०-९१	१४-५५
२०२०-०१	११-७०

नि□ष□र्ष :-

२०१० एफ.ए.ओ. विश्व कृषि सांख्यिकी, के अनुसार भारत को कई ताजा फल और सब्जिया, दूध, प्रमुख मसाले आदि का सबसे बडा उत्पादक ठहराया गया है। रेशेदार फसले जैसे जूट, कई स्टेपल जैसे बाजरा और अरंडिके तेल के बीज आदि का भी उत्पादक है। भारत गेहूँ और चावल का दुनिया का सबसे बडा उत्पादक है। भारत, दुनिया का दूसरा या तीसरा सबसे बडा उत्पादक है। कई चीजों में जैसे सूखे फल, वस्त्र, कृषि आधारित कच्चामाल, जडे और कंद फसले, दाल, मछलियाँ, अंडे, -ारियल, □-ा, और कई सब्जियाँ । २०१० में भारत को दुनिया का पाँचवा स्थान हासील हुआ है जिसके मुताबिक उसने ८०% से अधिक कई

नकदी फसलों का उत्पादन किया जैसे कॉफी और कपास आदि। २०११ □ रिर्पोट के अनुसार भारत को दुनिया में पाँचवे स्थान पर र□ा □या है। जिसके मुताबिक व सबसे तेज वृध्दि के रुप में पशुधन उत्पादन करता है। २००८ के एक रिपार्ट ने दावा किया कि भारत की जनसंख्या चावल और गेहूँ का उत्पादन करने की क्षमाता से अधिक तेजी से बढ रही है। अन्य सूत्रों से पता चलता है कि, भारत अपनी बढती जनसंख्या का आसानी से उदर निर्वाह कर सकता है और साथ-ही-साथ चावल और गेंहूँ का निर्यात भी कर सकाता है। बस भारत को अपनी बुनियादी सुविधाओं को बढाना होगा जिससे उत्पादकता भी बढे जैसे अन्य देश ब्राजील और चीन ने ि□या है। भारत २०११ में लगभग २ लाख मीट्रिक टन गेहूँ और २०१ करोड मीट्रिक टन चावल का निर्यात अफ्रीका, नेपाल, बाग्लादेश और दुनिया भर के अन्य देशों को किया है।

जलीय कृषि और पकड मत्स्यपालन भारत में सबसे तेजी से बढते उद्योगो में से एक है। १९०० से २०१० के बीच भारतीय मछली फसल हुई जबकि जलीय कृषि फसल तीगुनी बढ गई २००८ में भारत का सबसे बडा उत्पादन था। सुमुद्र और मीटे पानी की मत्स्य पालन के क्षेत्र में और दूसरा सबसे बडा जलीय मछली कृषि का निर्माता था। भारत ने दुनिया के सभी देशों को करीबन ६,००,००० मीट्रिक टन मछली उत्पादों का निर्यात किया।

भारत पिछले ६५ वर्षो में कृषि विभाग में कई सफलताएँ प्राप्त की है। ये लाभ मु□यरुप से भारत को हरित क्रांति, पावर जनरेशन, बुनियादी सुविधाओं, ज्ञान में सुधार आदि से प्राप्त हुआ है। भारत में फसल पैदावार अभी भी सिर्फ ३०% से ६०% ही है। अभी भी भारत में कृषि प्रमुख उत्पादकता और कुल उत्पादन लाभ के लिये क्षमताए है। विकासशील देशों के सामने भारत अब भी पीछे है। इसके अरिरिक्त गरीबी, अवसरंचना और असंगठित खुदरा के कारण दुनिया में सबसे ज्यादा खाद्य घाटे के कुछ अनुभव किये है और असका नुकसान भी उसे भुगतना पडा है ।

संदर्भ :-

१) □ृषि पराशर
२) □ृषि सं□ह
३) पराशर तंत्र
४) वृ□ायुर्वेद (सुरपाल)
५) कृषिगीता (मलयालम मे, रचनाकार परशुराम)
६) नुरक दर कन्नी फलहत (फारसी में, दारा शिकोह)
७) कश्यपीयकृषि सूक्ति (कश्यप)
८) विश्ववल्लभ (चक्रपाणि मिग्र)
९) लोकोपकार (कन्नड मे रचनाकार - यावु-दाराया
१०) उपवनविनोद (सारंगधर)।